डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.
दिनांक :- 7 FEB 2003

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु. अनुराधा शरद व्हटकर द्वारा लिखित "सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन" लघु शोध – प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर–४१६००४.

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 7 FEB 2003

डॉ. के. पी. शहा
एम.ए., पीएच. डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, कोल्हापुर।
तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं
शोध-निर्देशक
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ।
(महाराष्ट्र)

* *
प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, **कु. अनुराधा शरद व्हटकर** ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल (हिंदी) उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध "सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन" मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है ।

कु. अनुराधा शरद व्हटकर के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ ।

कोल्हापुर
दिनांक: 07-2-2003

डॉ. के. पी. शहा

प्रख्यापन

"सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन" लघु शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसीभी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध छात्र

(कु. अनुराधा श. व्हटकर)

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 7-2-2003

- अनुक्रमणिका -

प्राक्कथन			पृष्ठ क्रमांक
प्रथम अध्याय	-	सुरेंद्र वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।	- 1 से 7
द्वितीय अध्याय	-	सुरेंद्र वर्मा के नाट्य-साहित्य का सामान्य परिचय ।	- 8 से 19
तृतीय अध्याय	-	सुरेंद्र वर्मा के नाट्य-साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ।	- 20 से 47
चतुर्थ अध्याय	-	सुरेंद्र वर्मा के नाट्य-साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ ।	- 48 से 62
पंचम अध्याय	-	सुरेंद्र वर्मा के नाट्य-साहित्य की विशेषताएँ ।	- 63 से 78
		उपसंहार	- 79 से 82
		परिशिष्ट	- से
		संदर्भ ग्रंथ-सूची	- 83 से

प्राक्कथन

- प्राक्कथन -

हिंदी नाट्य-साहित्य में सुरेंद्र वर्मा का स्थान विशेष उल्लेखनीय है । वे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न नाटककार हैं । एक नाट्यकार के रूप में सुरेंद वर्मा की ख्याति एवं प्रतिष्ठा के मूल में जहाँ एक ओर स्त्री - पुरूष- संबंधों का आधुनिक धरातल पर चित्रण है, वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ महानगरीय जीवन को प्रस्तुत किए हैं । सुरेंद्र वर्मा मूलत: कमनीय काम - संबंधो के नाटककार के रुप में जाने जाते हैं । आज के विवाह-पूर्व प्रेम-संबंधों को बखूबी से उजागर किया गया है ।

सुरेंद्र वर्माजी के अबतक नाटक,एकांकी और अन्य साहित्यिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है । फिल्मो में भी उनकी गहरी दिलचस्पी रही है । ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन की व्याख्या करना ही उनका उद्देश है । वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं में प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया है । सुरेंद्र वर्मा एक साथ नाटककार भी हैं, निर्देशक भी तथा अभिनय भी कर लेते हैं ।

वर्तमान संदर्भ में सुरेंद्र वर्मा उन विशिष्ट नाटककारों में आते हैं, जिन्होंने बहुत कम समय में ही अपने नाटकों और एकांकियों व्दारा हिंदी रंगमंच की नयी मौलिक पध्दतियों और प्रभावोंसे समृध्द किया है ।

सुरेंद्र वर्माजी के नाटक इतिहास को दोहराते नहीं, बल्कि उसके भीतर से आधुनिक संवेदना को, आजके यथार्थ जीवन का साक्षात्कार कराते हैं । उन्होंने महानगरीय जीवन को नजदीक से जाना और उससे संबंधित समस्याओं को प्रस्तुत नाट्यसाहित्य के व्दारा प्रस्तुत किया ।

इन सभी विशेषताओंके कारण मैंने अपने शोध का विषय "सुरेंद वर्मा के नाटकोंमें चित्रित समस्याओंका अनुशीलन" ले लिया ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित हैं । शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में सुरेंद्र वर्मा का जन्म, शिक्षा, नौकरी आदि का विवेचन किया गया हैं । कृतित्व के अंतर्गत नाट्यसाहित्य के साथ अन्य विधाओंका परिचय भी मिलता है ।

द्वितीय अध्याय में सुरेंद वर्मा के नाट्य-साहित्य का सामान्य परिचय दिया है । इसमें स्त्री-पुरुषके बदलते संबंधों का खुलकर चित्रण हुआ है। आज की यथार्थ स्थिति का भी चित्रण किया गया है ।

तृतीय अध्याय मे सामाजिक समस्याओं का अंकन किया है । सामाजिक समस्याओंके अंतर्गत परिवर्तित स्त्री-पुरुष संबंध और मूल्य खडण की समस्या, नैतिकता का लोप, पाश्चात्य संस्कृतिका भारतीय समाज-जीवन पर बूरा प्रभाव,परिवार नियोजन की समस्या, काम की समस्या, अवैध संतान की समस्या, प्रेम की समस्या, स्वच्छंदवादिता, नशापान की समस्या, घिनौनी राजनीति की समस्या आदि समस्याओं की चर्चा हुई हैं ।

चतुर्थ अध्याय मे परिवार से संबंधित समस्याओं का चित्रण किया गया है । इसमें विवाह समस्या, परिवार विघटन की समस्या, यौन असंतुष्टि की समस्या, अकेलेपन की समस्या, बेरोजगारी की सम्स्या, उत्तराधिकारी की समस्या आदि समस्याएँ दृष्टिगोचर होती है ।

पंचम अध्याय में वर्माजीके नाट्य-साहित्य की विशेषताओं का विवेचन किया है । इसमें शीर्षक की सार्थकता, पारिवारिक जीवन की त्रासदी, साहित्य में श्लील-अश्लीलता का प्रश्न, रंग प्रतीकों का प्रयोग, स्मृत्यावलोकन, भाषा का प्रयोग और विडंबना, संवादीय संरचना तथा अन्य विशेषताओं का समावेश हैं ।

शोध प्रबंध के अंत में सहायक संदर्भ ग्रंथों की सूची जोडी है, जो इस शोध - कार्य के संबंध में विशेष रुपसे सहायक सिध्द हुई । मेरे इस लघु-शोध प्रबंध को दिशा निर्देश करने का कार्य यशवंतराव चव्हाण कॉलेज के हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं रीडर श्रध्देय डॉ. के. पी. शहा जी ने दिया है ।

आपकि कृपादृष्टि के कारण ही मैं इस दिशा में कार्य करने में सफल हुई हूँ । आपके योगदान की मैं सदा ऋणी रहूँगी ।

हिंदी विभाग के आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाणजी तथा अन्य गुरुजनोंने मुझे समय-समय पर सहयोग दिया। इसलिऐ मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ ।

सबके प्रति आभार व्यक्त करते हुए मैं अपना लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत करती हूँ ।

आपकी
(कु. अ. श. व्हटकर)

कोल्हापुर -
दिनांक - 7-2-2003